अंगूर

सिंचाई

भारत में अंगूर ज्यादातर अपर्याप्त वर्षा और उच्च वाष्पोत्सर्जन घाटा वाले अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में उगाए जाते हैं। इसलिए अनुपूरक सिंचाई आवश्यक हो जाती है। ग्रोथ के विभिन्न चरणों के दौरान बेलों को पानी की आवश्यकता अलग-अलग होती है।

बेलों की छंटाई और उर्वरक डालने के बाद तुरंत सिंचाई की जाती है। बेरी ग्रोथ स्टेज के दौरान, 5-7 दिनों के अंतराल पर सिंचाई की जाती है। फलों की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए फसल-कटाई से पहले कम से कम 8-10 दिनों के लिए पानी को रोका जाता है। छंटाई के बाद सिंचाई फिर से शुरू की जाती है। गर्मियों की छंटाई से बारिश की शुरूआत तक की अवधि के दौरान, सिंचाई साप्ताहिक अंतराल पर की जाती है और इसके बाद 10-12 दिनों के अंतराल पर जब तक सर्दियों की छंटाई मिट्टी की नमी हालात पर निर्भर रहेगी। गर्मियों की छंटाई के बाद 45-50 दिनों के दौरान अत्यधिक सिंचाई नहीं की जानी चाहिए क्योंकि वनस्पति विकास के संवर्धन द्वारा यह फूल बीजारोपण पर उल्टा प्रभाव डालती है। इसी पकार, फूल खुलने से लेकर बेरी के मटर साइज के आकार तक ूलगातार और भारी सिंचाई से भी बचना चाहिए क्योंकि वें कोमल फफूंदी रोग की समस्या को भडका देती है।

उत्पादकों द्वारा अपनी अंगूर बेलों को सिचित करने हेतु अपनाई गई सबसे आम सिंचाई विधियों में फुरो या रिंग विधि हैं। हालांकि, हाल के वर्षों में, जहां पर सिंचाई के लिए उपलब्ध पानी बहुत ही कम हैं और भारी क्लेव मिट्टी की दिशा में मिट्टी औसत दर्जे की है, वहां पर ड्रिप सिंचाई को अपनाया जा रहा है। यह प्रणाली सिंचाई के पानी के किफायती और कुशल उपयोग पर ध्यान रखती है। अंगूरों की ड्रिप सिंचाई में इमिटरस और उनकी क्लोगिंग का प्लेशमेन्ट, प्रतिदिन दी जाने वाली पानी की मात्रा, डिस्चार्ज की दर महत्वपूर्ण विवेचन हैं।